पत्रकारिता
के
कुरआनीय सिद्धांत

डॉ॰ सैयद शाहिद अली

संदेश प्रकाशन दिल्ली

पत्रकारिता
के
कुरआनीय सिद्धांत

लेखक
डॉ॰ सैयद शाहिद अली

संदेश प्रकाशन

Paterkarita ke Quranea Sidhdhant (Hindi)

Dr. Syed Shahid Ali

Year of Edition 2006

Price Rs.25/-

पुस्तक का नाम	:	पत्रकारिता के कुरआनीय सिद्धांत
लेखक	:	डॉ॰ सैयद शाहिद अली
हिन्दी एडीशन	:	2006 ई०
मूल्य	:	25/-
कम्पोजिंग	:	सना ग्राफिक्स, नई दिल्ली.25
मुदक	:	काक ऑफसेट प्रिंटर, दिल्ली-110006

Published by :

Sandesh Parkashan

1955, Gali Nawab Mirza, Moh. Qabristan, Opp. Anglo Arabic School, Turkman Gate Delhi-6

Sole Distributor:

Kitabi Duniya

1955, Gali Nawab Mirza, Moh. Qabristan, Opp. Anglo Arabic School, Turkman Gate Delhi-6

Mob. No: 9313972589, Ph: 011-23288452

आमुख

''यह (क़ुरआन) लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुंज है और मांर्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।'' (क़ुरआन, 45:20)

''और हम (ख़ुदा) ने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?'' (क़ुरआन, 54:17)

''लो हम (ख़ुदा) ने तुम्हारी ओर एक किताब (क़ुरआन) अवतरित कर दी है, जिसमें तुम्हारे लिए (तुम्हारी वास्तविकता की) याददिहानी है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?'' (क़ुरआन, 21:10)

....

क़ुरआन इंसान के लिए ख़ुदा की पसन्द को बताता है। एक इंसान जब पत्रकार बनता है तब उस पर दो जिम्मेदारियाँ आती हैं : एक इंसान होने की और दूसरे पत्रकार होने की। अगर अच्छाई करने पर उसे सवाब ज़्यादा मिलता है, तो बुराई करने पर उसे सज़ा भी ज़्यादा मिलती है। उसका काम अहम है मगर नाज़ुक भी।

ख़ुदा की निगाह में अच्छा बन्दा बनने के कई रास्ते (Channels) हैं, जैसे ज्ञान के द्वारा, व्यापार के द्वारा, राजनीति के द्वारा और पत्रकारिता के द्वारा, इत्यादि।

क़ुरआन सभी मनुष्यों के लिए ईश्वर का आख़िरी, मुकम्मल और महफ़ूज़ संदेश है। क़ुरआन में सभी इंसानों के लिए मार्गदर्शन है। वह पत्रकार को भी बताता है कि उसका रवैया ख़ुदा की तरफ़, ख़ुद की तरफ़ और समाज की तरफ़ कैसा होना चाहिए।

इस किताब में पत्रकारिता से संबंधित, क़ुरआन की सभी आयतों को

न पेश करके, सिर्फ़ नमूने की कुछ आयतों को पेश किया गया है, ताकि इसी तरीक़े पर पाठक क़ुरआन की दूसरी आयतों को स्वयं तलाश कर ले। तब वह उसकी अपनी खोज (Discovery) होगी। वह उसकी ज़्यादा क़द्र करेगा और उस पर ज़्यादा अमल भी करेगा।

याद रखिये :

> **"ख़ुदा ने पैदा किया मृत्यु और जीवन को ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है।"**
>
> **(क़ुरआन, 67:2)**

डॉ॰ सैयद शाहिद अली

रीडर

डिपार्टमेंट ऑफ़ इस्लामिक इस्टडीज़,

जामिआ मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रिय यूनीवर्सिटी),

नई दिल्ली-110025

E-mail : drali1@rediffmail.com

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
(दयावान और कृपाशील ख़ुदा के नाम से)

ख़बर लाने वाले की जाँच

"यदि कोई फ़ासिक़ (ईश्वर का अवज्ञाकारी जिसका ज़ाहिर हाल उसे अविश्वसनीय बताता हो) तुम्हारे पास कोई (महत्वपूर्ण) ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़्सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।" (क़ुरआन, 49:6)

ज़िन्दगी में हर इंसान को अच्छी या बुरी ख़बरों से वास्ता पड़ता है। यह ख़बरें अहम भी होती है और ग़ैर-अहम भी। इन ख़बरों के लाने वाले अच्छे लोग भी होते हैं और बुरे भी। इन ख़बरों की बुनियाद पर इंसान फ़ैसला लेता है, जिसका दूसरें इंसानों पर अच्छा या बुरा असर पड़ता है। इन सारी बातों में सब से अहम रोल ख़बर लाने वाले का होता है और फिर ख़बर का। ख़बर लाने वाला अगर झुठा व धोखेबाज़ है और आपके ज़रिये किसी को नुक़्सान पहुँचाना चाहता है, तो आप लोगों के नुक़्सान का सबब बन सकते हैं। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि ख़बर लाने वाले की गहरी जाँच की जाए।

ख़बर लाने वाले की जाँच के अलावा ख़बर की जाँच भी ज़रूरी है। लेकिन अगर आप हर ख़बर की जाँच करने लग जाएँ तो समाज में बेयक़ीनी और शक का माहौल बनेगा। इसलिए ख़बरों की दो क़िस्में करना ज़रूरी है : एक अहम ख़बरें और दूसरे ग़ैर-अहम या कम अहम ख़बरें।

अहम ख़बरों में जाँच पड़ताल की ज़्यादा ज़रूरत होती है और ग़ैर या कम अहम ख़बरों में जाँच पड़ताल की ज़रूरत नहीं होती या कम होती है। जैसे आप किसी से मिलने उसके घर जाते हैं; एक आदमी उस घर से निकलता है और आप को अन्दर आने की इजाज़त देता है। ऐसे मौक़े पर आप घर के अन्दर जा सकते हैं, घर के मालिक से पूछे बग़ैर। लेकिन वे ख़बरें जिनकी बुनियाद पर सरकार कोई नीति बनाती है, उनमें ख़बर के अलावा ख़बर लाने वाले की जाँच करनी भी ज़रूरी होती है।

अहम ख़बरों में ख़बर लाने वाले की जाँच करना बहुत ज़रूरी होता है। नुक़्सान से बचने का यही एक तरीक़ा है, वर्ना बाद में पछताने से कोई फ़ायदा नहीं होता।

ख़बर की जाँच

"जब उनके पास निश्चिन्तता या भय की कोई बात पहुँचती है तो उसे फैला देते हैं, हालांकि अगर वे उसे रसूल और अपने समुदाय के उत्तरदायी व्यक्तियों तक पहुँचाते, तो उसे वे लोग जान लेते, जो उनमें उसकी जाँच कर सकते हैं।" (क़ुरआन, 4:83)

कुशल और ज़िम्मेदार इंसान के ज़रिये अहम ख़बर की छानबीन बहुत ज़रूरी है। वर्ना उस ख़बर की बुनियाद पर लिया गया कोई फ़ैसला ख़ुद के लिए या दूसरों के लिए नुक़्सानदेह हो सकता है।

समाज में कुछ लोग ज़िम्मेदार और संजीदा मिज़ाज होते हैं और कुछ ग़ैर-ज़िम्मेदार व ग़ैर-संजीदा। यह दूसरी तरह के लोग बातों व चीज़ों को अहमीयत की नज़र से नहीं देखते, बल्कि हर अहम व ग़ैर-अहम बात को मज़ाक़ समझते हैं; जब तक कि उन पर उसका फ़ौरी व नुक़्सानदेह असर न पड़ रहा हो।

समाज कभी जंग की हालत से गुज़रता है, कभी अमन की हालत से और कभी बेचैनी की हालत से। ख़ासतौर पर बुरे हालात में समाज के यह ग़ैर-ज़िम्मेदार लोग, जब किसी अच्छी या बुरी ख़बर को सुनते हैं, तो बिना सोचे समझे वे उसे फैला देते हैं। जबकि उस ख़बर का इंसान व समाज पर बुरा व नुक़्सानदेह असर भी हो सकता है, जिसे बादमे क़ाबू में करना मुमकिन नहीं रहता। अफ़वाहों की वजह से हुए नुक़्सान से बचने का एक ही इलाज है और वह है अफ़वाहों को फैलने से रोकना।

आम हालात या ख़ास हालात में जब कोई ख़बर मिले तो लोगों को चाहिए कि उसे ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचा दे और ख़ामोश रहें। तब उन ज़िम्मेदार लोगों को चाहिए कि वे अपने में से यह ख़बर उन लोगों को दें, जो बातों की हक़ीक़त मालूम करने और तहक़ीक़ व जाँच करने की सलाहियत रखते हैं, ताकि सच्चाई का पता लग सके। और फिर उसकी बुनियाद पर अमल के लिए कोई फ़ैसला लिया जा सके।

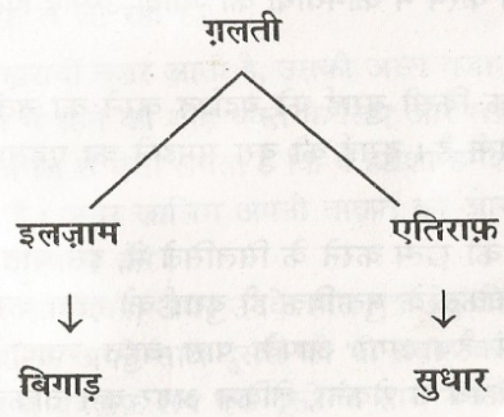
ख़बर लाने वाले की जाँच की तरह ही ख़बर की जाँच भी अहम है। क्योंकि ऐसा संभव है कि ख़बर लाने वाला सही हो लेकिन ख़बर ग़लत हो। या ख़बर लाने वाला ग़लत हो लेकिन ख़बर सही हो। या ख़बर लाने वाला ग़लत हो और ख़बर भी ग़लत हो। या ख़बर लाने वाला सही हो और ख़बर भी सही हो।

झूठी तोहमत न लगाना

"और जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह की कमाई करे, फिर उसे किसी निर्दोष पर थोप दे, तो उसने एक बड़े लांछन और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर ले लिया।" **(क़ुरआन, 4:112)**

एक इंसान वह है, जो अंजाने में कोई ग़लती या गुनाह करे और उसे माने। दूसरा इंसान वह है, जो जान-बूझकर कोई ग़लती या गुनाह करता है उसे मानता भी नहीं। पहले इंसान के मन में पछतावा पैदा होता है और वह तौबा करता है। जबकि दूसरा इंसान ज़िद करता है, ख़ुद को सही साबित करने और अपनी ग़लती दूसरों के सर मढ़ने की कोशिश करता है। नतीजा यह कि पहला इंसान सुधार और दूसरा बिगाड़ की ओर बढ़ता है। पहला इंसान ख़ुदा की निगाह में माफ़ी का हक़दार बनता है और दूसरा सज़ा का।

इंसान कमज़ोर पैदा किया गया है। इंसान जल्दबाज़ पैदा किया गया है। इंसान कंजूस पैदा किया गया है। मुमकिन नहीं कि इंसान से ग़लती न हो। ग़लती न करना, बड़ाई की बात नहीं, बल्कि ग़लती करके उसका एतराफ़ करना, बड़ाई है। एक ग़लती आदम (अलैहि॰) से हुई, एक ग़लती इबलीस से। आदम (अलैहि॰) ने अपनी ग़लती को माना, इबलीस ने नहीं माना। नतीजा आदम (अलैहि॰) माफ़ किए गए और इबलीस को सज़ा दी जाएगी।



अच्छाई फैलाना : बुराई रोकना

"और तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करने वाले लोग हैं।" (क़ुरआन, 3:104)

समाज में कई तरह के लोग होते हैं : एक, वे बुरे लोग जो ख़ुद बुरे होते हैं लेकिन बुराई नहीं फैलाते। दूसरे, वे बुरे लोग जो ख़ुद बुरे होते हैं और बुराई भी फैलाते हैं। तीसरे, वे अच्छे लोग जो ख़ुद अच्छे होते हैं लेकिन अच्छाई नहीं फैलाते। चौथे, वे अच्छे लोग जो ख़ुद अच्छे होते हैं और अच्छाई भी फैलाते हैं।

ख़ुदा की नज़र में इन सभी लोगों में से सबसे बुरे, वे लोग होते हैं जो ख़ुद बुरे होते हैं और बुराई भी फैलाते हैं। और वे लोग सबसे अच्छे होते हैं, जो ख़ुद भी अच्छे होते हैं और दूसरे लोगों को अच्छाई की तरफ़ बुलाते, बुराई से बचने व अच्छाई करने में उनकी मदद भी करते हैं। दरअस्ल यही लोग ख़ुदा को पसंद हैं और वह इन्हीं को अपने अज़ाब से बचाता है। (क़ुरआन, 7:163-165)

समाज में लोगों को ग्रूप बनाने का हक़ है, लेकिन यह सिर्फ़ अच्छे कामों के लिए है न कि बुरे कामों के लिए। बुराई को रोकने और अच्छाई को फैलाने के लिए एक आदमी की जिद्दोजहद के मुक़ाबले कई लोगों की मिली-जुली कोशिश ज्यादा असर रखती है। अकेला आदमी जब किसी बड़ी बुराई को रोकने की कोशिश करता है, तो उसके नुक़्सान उठाने का ख़तरा भी ज़्यादा होता है। ग्रूप बनाकर अच्छाई को फैलाने की कोशिश करने में कामयाबी की ज़्यादा उम्मीद होती है और नुक़्सान का कम ख़तरा।

लंबे समय तक किसी बुराई को बर्दाश्त करने का नतीजा, यह होता है कि बुराई जड़ पकड़ लेती है। बुराई को बुरा समझने का एहसास भी ख़त्म हो जाता है।

इस्लाम बुराई को ख़त्म करने के सिलसिले में, इस बात को भी बताता है कि इंसान को अपनी ताक़त के मुताबिक़ ही बुराई को ख़त्म करना चाहिए, वर्ना उल्टे नुक़्सान का ख़तरा है। अगर आपके पास बहुत ज्यादा ताक़त (Powerful Position) है, तो हाथ से रोकना, लेकिन अगर कम ताक़त (Less Powerful

Position) है, तो ज़बान से रोकना और अगर ताक़त नहीं (Powerless Position) है, तो दिल से बुरा जानना ही बेहतर है।

आज़ादी दो तरह की होती है : मशरूत आज़ादी (Conditional Freedom) और ग़ैर-मशरूत आज़ादी (Unconditional Freedom)। समाज में इंसान को अपनी बात कहने व लिखने की जो आज़ादी दी जाती है, वह मशरूत होती है। यह तब तक ही मिलती है जब तक किसी का नुक़्सान न हो और बुराई को बढ़ावा न दिया जा रहा हो। बुरे लोगों को अगर बुराई फैलाने की खुली आज़ादी हो, तो इसका नुक़्सान उनके साथ-साथ समाज के अच्छे लोगों को भी भुगतना पड़ता है। इस बात को एक मिसाल में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इस तरह समझाया :

"अल्लाह के हुक्मों को मानने वाले (अच्छे लोगो) और तोड़ने वाले (बुरे लोगो) की मिसाल ऐसी है जैसे कुछ लोग किसी (पानी के) जहाज़ में लॉटरी डाल कर सवार हो। कुछ लोग ऊपरी मंज़िल में और कुछ लोग निचली मंज़िल में रहें। जहाज़ की निचली मंज़िल में रहने वालों को जब पानी की ज़रूरत हो, तो ऊपरी मंज़िल में रहने वालों के पास जाना पड़े। तब वे कहें :

"अगर हम अपने (जहाज़ के) निचले हिस्से में सुराख़ कर लें, तो ऊपर वाले (बार-बार पानी देने की) तकलीफ़ से बच जाएँ। (उस हालत में) अगर उन्हें ऐसा करने दिया जाए, तो सब डूब जाएंगे और अगर उन्हें ऐसा करने से रोक देते हैं, तो वे भी बच जाएंगे और सभी बच जाएंगे।" (हदीस : बुख़ारी)

इंसान की ज़िन्दगी हर लम्हे हरकत में है, उस पानी के जहाज़ की तरह जो लहरों पर हिचकोले ले रहा हो। इंसान को हर वक़्त होशियार रहने की ज़रूरत है, वर्ना कोई भी लहर डुबो सकती है। इंसानी समाज भी एक पानी के जहाज़ की तरह है। जहाज़ में अच्छे व बुरे और होशियार व बेवकूफ़ सभी सवार हैं। जहाज़ सबको एक ही मंज़िल यानी मौत की तरफ़ ले जा रहा है।

समाज में जो ख़राबी नज़र आती है, उसकी अस्ल वजह यह है कि लोग ज़बान से तो अपने दुनिया में रहने को थोड़े वक़्त के लिए और सफ़र की हालत में बताते हैं। लेकिन उनके अमल से ऐसा लगता है कि वे हमेशा-हमेशा ज़मीन पर रहने वाले हैं और मंज़िल पर हैं। अगर ज़ालिम अपनी ताक़त को आरज़ी माने व दुनिया को इम्तिहान, तो वह ज़ुल्म न करे।

समाज में सब लोगों को, अगर उनके हाल पर छोड़ दिया जाए तो वे न सिर्फ़ खुद तबाह होंगे, बल्कि अपने साथ दूसरों को भी तबाह करेंगे। समाज में अच्छे व बुरे और अक़लमंद व बेवकूफ़ सब एक-दूसरे के साथ बंधे हैं। इसलिए सबको सब के बचाव की कोशिश करते रहना चाहिए।

लुभाने वाली बातों से न बहकाना

"लोगों में से कोई ऐसा भी है जो दिल को लुभाने वाली बातों का ख़रीदार बनाता है, ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (दूसरों को) भटकाए और उनका परिहास करे। वही है जिनके लिए अपमानजनक यातना है।" **(क़ुरआन, 31:6-7)**

समाज में बुराई को फैलाने का एक तरीक़ यह है कि उसे अच्छा नाम दो और फैला दो। इसी तरह अच्छाई को मिटाने का एक तरीक़ा यह है कि उसे बुरा नाम दो और ख़त्म कर दो।

अपने फ़ायदे के लिए कुछ लोग अपने पद का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। वे बुराई को अच्छाई बताकर और दिल को लुभाने वाली बनाकर पेश करते हैं। इससे लोग धोखा खाते हैं और वह बुराई समाज में इतनी ज़्यादा फैल जाती है, कि उस बुराई के बुरा होने का एहसास ही ख़त्म हो जाता है। बल्कि उसे अच्छा समझा जाने लगता है। यह हालत किसी भी समाज के लिए बहुत नुक़्सानदेह होती है। इसके ज़िम्मेदार सबसे ज़्यादा वे इंसान होते हैं, जो बुराई को फैलाते हैं।

बुरे हुक्मरान भी लोगों को गुमराह करने और संजिदा मसाइल से लोगों का ध्यान हटाने के लिए, कल्चर के नाम पर, उन्हें खेलों, नाच-गानों वग़ैरह में लगा देते हैं, ताकि अवाम ग़ाफ़िल रहें और उन्हें पता ही न चले कि वे किस तबाही की तरफ़ जा रहे हैं। कुछ लोग वे होते हैं जो अंजाने में बुरा काम करते और बुराई फैलाते हैं। और कुछ वे लोग हैं जो समझ-बूझकर बुरा काम करते और बुराई फैलाते हैं। ख़ुदा की निगाह में दोनों मुजरिम हैं, लेकिन दूसरी क़िस्म के लोग बड़े मुजरिम हैं। इसलिए उन्हें ज़्यादा सख़्त अज़ाब दिया जाता है।

बातें दो तरह की होती हैं : दिल को न लुभाने वाली (जैसे नसीहत की बातें) और दिल को लुभाने वाली (जैसे बुरी कहानियाँ, डरामे, नाविल, गंदा अदब, गप्पें, टी॰वी॰, रेडियो व इंटरनेट के गंदे प्रोग्राम वग़ैरह)।

नसीहत की बातें इसलिए दिल को नहीं लुभाती और बुरी लगती हैं, क्योंकि वह इंसान को ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाती है। वे अच्छाई करने और बुराई से बचने को कहती है, जिसमें तक्लीफ़ होती है। इसके मुक़ाबले तफ़रीह की बातें इसलिए दिल को लुभाती हैं क्योंकि वह बुराई को छोड़ कर अच्छाई की तरफ़ आने को नहीं कहती। वे हक़ीक़तों पर परदा डालती हैं। बदलाव की बात नहीं करती और फ़ौरी मज़ा देती है।

बुरे गुमान करने, निजी मामलात में दख़ल देने और निन्दा करने से बचना

"ऐ ईमान लाने वालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुम में से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे।" **(क़ुरआन, 49:12)**

इंसान अपनी ज़िन्दगी में तरह-तरह के गुमान करता है। बिना गुमान किए बहुत से कामों का करना नामुमकिन है। जैसे सुबूतों पर गुमान करके जज का कोई फ़ैसला करना, रिश्तों, दोस्ती व कारोबार में गुमान की बुनियाद पर कोई राय बनाना वग़ैरह। गुमान दो तरह के होते हैं : अच्छे और बुरे। अच्छा गुमान रखने पर एक इंसान दूसरे इंसान में अच्छाइयाँ तलाश करता है, जिससे रिश्ते बेहतर होते हैं। बुरा गुमान करने से एक इंसान को दूसरे इंसान में सिर्फ़ बुराइयाँ ही नज़र आती हैं, जिससे रिश्ते बिगड़ते हैं। गुमान करना बुरी बात नहीं है लेकिन बुरे गुमान करना अच्छा नहीं होता, क्योंकि इसका असर बुरा ही पड़ता है।

टोह लेना अच्छा भी है और बुरा भी। अच्छा तब है जब किसी एक इंसान या सरकार के ज़रिये, किसी की ज़रूरत या परेशानी को मालूम करने और उसकी मदद करने के लिए ऐसा किया जाए। लेकिन टोह लेना बुरा तब बन जाता है जब किसी की बुराइयों या राज़ की बातों को मालूम करके, उसे बदनाम किया जाए। और इससे किसी तरह का फ़ायदा उठाया जाए।

किसी इंसान या सरकार का यह काम नहीं है कि लोगों की टोह में रहे, उनकी बुराइयों को तलाश करके निकाले और उन्हें सज़ा दे; जब तक कि वे क़ानून न तोड़ें। सिर्फ़ उन बुराइयों के ख़िलाफ़ ताक़त का इस्तेमाल सही है जो फैल जाएं। छुपी हुई बुराइयों को ठीक करने का रास्ता उनकी टोह लेना या जासूसी करना नहीं है। बल्कि तालीम के ज़रिये, नसीहत के ज़रिये और अवाम को सुधारने के लिए अच्छा माहौल बनाने की कोशिश करना ही, सही तरीक़ा है।

इस्लाम, इंसान की बुराइयों को तीन क़िस्मों में बांटता है : एक, वह बुराई या कमी जो किसी इंसान में होती है, अगर उस बुराई या कमी का ज़िक्र उसके

सामने किया जाए, तो उसे बुरा लगे। इस तरह की किसी बुराई का उस इंसान की ग़ैर मौजूदगी में ज़िक्र करना "ग़ीबत" कहलाता है। दूसरे, वह बुराई या कमी जो किसी इंसान में नहीं होती मगर उसकी ग़ैर मौजूदगी में, उससे जोड़ दी जाती है। यह "बुहतान" कहलाती है। तीसरे, एक आदमी की वह बुराई जो दूसरे आदमी को इसलिए बताई जाए ताकि उन दोनों में लड़ाई हो, यह "चुग़ली" कहलाती है। इस्लाम इन तीनों बातों के करने को हराम बताता है।

मगर "ग़ीबत" की इज़ाज़त सिर्फ़ इन बातों में है :

- ज़ालिम के ख़िलाफ़ मज़लूम की शिकायत, हर उस इंसान के सामने जिससे यह उम्मीद हो कि वह इस ज़ुल्म को रोक सकता या रुक्वा सकता है।
- सुधार की नीयत से, किसी इंसान या गिरोह की बुराइयों का ब्यान करना, ऐसे लोगों के सामने जिनसे यह उम्मीद हो कि वे इन बुराइयों को रोकने के लिए कुछ कर सकेंगे।
- जज के सामने फ़ैसला लेने के लिए।
- लोगों के सामने किसी इंसान की बुराई करना, उनको नुक़्सान से बचाने के मक़्सद से; जैसे लेखकों और गवाहों की कमज़ोरियाँ ब्यान करना; क्योंकि इसके बिना अदालतों को नाइंसाफ़ी, अवाम व तालिबइल्मों को गुमराही से बचाना मुमकिन नहीं। या जैसे कोई किसी से शादी का रिश्ता करना चाहता है, किसी के साथ कारोबार करना चाहता है, पड़ोस में मकान लेना चाहता है या अपनी कोई अमानत रखना चाहता है। ऐसा इंसान अगर आप से मशवरा ले, तो ज़रूरी है कि उसे सही बात बताई जाए ताकि बेख़बरी में वह धोखा न खा सके।
- ऐसे लोगों पर खुलेआम तंक़ीद करना और उनकी बुराई बताना, जो बुराइयाँ व गुमराहियाँ फैला रहे हों और लोगों को ज़ुल्म पर उभार रहे हों। जो लोग किसी बुरे नाम से इतने ज़्यादा मशहूर हों चुके हों कि किसी और नाम से पहचाने न जा सकते हों, उनके लिए वह नाम इस्तेमाल करना, मगर तारीफ़ के लिए, न कि बुराई के लिए।

खुलासा यह कि अगर किसी समाज में बुरे गुमान रखना, टोह में पड़ना और पीठ पीछे निन्दा करना आम हो जाए, तो उस समाज में इंसानी रिश्तों में बिगाड़ पैदा हो जाता है, जिनका इलाज बाद में मुश्किल होता है। दरअस्ल इन बुराइयों से बचना ही इनका इलाज है।

हँसी न उड़ाना

"न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुषों की हँसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छे हों; और न आपस में एक-दूसरे को ताने कसो और न एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो।" (क़ुरआन, 49:11)

इंसान में खुद को बड़ा साबित करने का एक जज़्बा पाया जाता है, जो अपने आप में बहुत फ़ायदेमंद है। अगर ऐसा नहीं होता, तो दुनिया में कोई भी नया काम नहीं हो पाता, न कोई नई रिसर्च होती, न कोई नई ईजाद (Invention)। इंसान व उसके इल्म की तरक़्क़ी रुक जाती।

खुद को बड़ा साबित करने का यह जज़्बा, इंसान के अन्दर एक दबाव (Pressure) पैदा करता है। किसी इंसान में यह दबाव ज़्यादा होता है और किसी में कम। इस जज़्बे की तस्कीन (Fulfilment) दो तरीक़े से हो सकती है : मनफ़ी (Negative) और मुस्बत (Positive)।

मनफ़ी तरीक़ा यह है कि खुद को बड़ा साबित करने के लिए दूसरों को छोटा साबित किया जाए; उनका मज़ाक़ बनाकर, उनको ताने देकर और उन्हें बुरे नामों से पुकार कर। मुस्बत तरीक़ा यह है कि खुद बहुत मेहनत करके कोई बड़ा फ़ायदेमन्द और नया काम किया जाए, ताकि लोग बड़ा माने और अहमियत दे। पहला तरीक़ा आसान व दूसरा मुश्किल है, इसलिए ज़्यादातर लोग पहले तरीक़े को ही अपनाते हैं।

किसी का मज़ाक़ उड़ाने में, सिर्फ़ ज़बान व क़लम से मज़ाक़ उड़ाना ही नहीं आता, बल्कि नक़ल उतारना, किसी हरकत पर हँसना, किसी की जिस्मानी ख़राबी की तरफ़ लोगों का ध्यान दिलाना, चोटे कसना, इल्ज़ाम लगाना, खुल्लम-खुल्ला या इशारों में किसी को मज़ाक़ का निशाना बनाना, ताने देना वग़ैरह सभी आते हैं। यह बातें मना हैं। इनके दो तरफ़ा बुरे असर पड़ते हैं। एक तो मज़ाक़ उड़ाने वाले और जिसका मज़ाक़ उड़ाया जाए, दोनों के बीच के रिश्ते ख़राब होते हैं। दूसरे दोनों के दोस्तों, रिश्तेदारों, हमदर्दों के भी एक-दूसरे से रिश्ते ख़राब होते हैं। इस तरह यह बातें सामाजिक रिश्तों को बिगाड़ कर नफ़रत का माहौल बनाती हैं। यह नफ़रत

आगे चलकर दुश्मनी और इनतिक़ाम में बदल जाती है।

ख़ुदा को बहुत ज़्यादा नापसंद है कि ज़बान व क़लम से कोई किसी को बुरा कहे। दरअस्ल यह बातें मज़हब, ख़ानदान, ताक़त, दौलत, खुबसूरती वग़ैरह की बुनियाद पर की जाती हैं और यह समझ कर की जाती है कि यह चीज़े उसके पास ज़्यादा है और दूसरे के पास कम। हक़ीक़त में कौन बड़ा है और कौन छोटा, इसका फ़ैसला तो ख़ुदा आख़िरत में करेगा। इस बात को समझ कर ही इंसान अपनी इन बुरी आदतों पर क़ाबू पा सकता है।

नेक औरतों को बदनाम न करना

''जो लोग शरीफ़ एवं पाक दामन स्त्रियों पर तोहमत लगाएँ, फिर चार गवाह न लाएँ, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी भी स्वीकार न करो–वही हैं जो अवज्ञाकारी हैं।–सिवाय उन लोगों के जो इसके पश्चात तौबा कर लें और सुधार कर लें। तो निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।'' **(क़ुरआन, 24:4-5)**

एक इंसान का दूसरे इंसान पर झूठा इल्ज़ाम लगाना, अख़्लाक़ी तौर पर उसके क़त्ल करने जैसा है। बिना सुबूत इल्ज़ाम लगाने को अगर खुली छूट दी जाए, तो समाज में लोगों के नाजाइज़ ताल्लुक़ात का चर्चा होगा, और दूसरे लोगों को भी इससे हौसला मिलेगा।

मर्दों का औरतों पर और औरतों का मर्दों पर तोहमत लगाना सही भी हो सकता है और ग़लत भी। किसी का किसी पर तोहमत लगाना और गवाह न ला सकना, इस बात का सुबूत नहीं है कि वह झूठा है। तब क़ुरआन गवाह न ला सकने पर सज़ा देने को क्यों कहता है?

क्योंकि यह बिल्कुल इसी तरह है जैसे एक इंसान, एक कोने में गन्दगी लिए बैठा है, तब दूसरा इंसान उस गन्दगी को उठा कर सारे समाज में फैला दे। एक आदमी किसी गुनाह को होते देखता है। तब उसके सामने दो रास्ते होते हैं : एक, वह गुनाह यानी गन्दगी जहाँ पड़ी है उसे वहीं पड़ा रहने दे, और उस इंसान को

समझा-बुझाकर रोकने की कोशिश करे। दूसरे सिर्फ़ हुकूमत को सुबूत के साथ उसकी ख़बर दे, ताकि वह उसे साफ़ कर दे। अगर वह इंसान पब्लिक में इसका चर्चा करेगा तो एक तरफ़ पड़ी गन्दगी को फैलाने का मुजरिम होगा और अगर वह चार गवाहों के बिना हुकूमत तक इस गन्दगी की ख़बर ले जाएगा, तो वह भी इसे साफ़ न कर सकेगी। नतीजा यह होगा कि इस मुक़द्दमें की नाकामी, उस गन्दगी को फैलाने का सबब बनेगी और बुरे काम करने वालों को हौसला मिलेगा। इस तरह बिना सुबूत के तोहमत लगाने वाला मुजरिम है चाहे वह अपनी जगह सच्चा ही क्यों न हो।

बुराई न फैलाना

"(निश्चय ही अल्लाह) अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह (स्वयं) तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।" **(क़ुरआन, 16:90)**

बेहयाई को रोकना हर इंसान की ज़िम्मेदारी है; यह फ़र्द (Individual) और समाज दोनों के लिए नुक़्सानदेह है।

बेहयाई में नंगापन, बदचलनी, बेग़ैरती, ऐसा गीत व संगीत जो इंसान का खुद पर से कंट्रोल खो दे, गन्दा अदब, गन्दी फिल्में वग़ैरह सभी बातें शामिल हैं। ऐसी सारी चीज़े बुराई की जड़ बनती हैं। जैसे मर्द व औरत का बेशर्मी से बेरोक-टोक मिलना उनको ज़िना (Adultry) की तरफ़ ले जाता है। दरअस्ल बेहयाई, बुराई को जन्म देती है और बुराई, बग़ावत पर उभारती है, अच्छे अख़्लाक़ से और समाज से।

बदक़िस्मती से हमारे ज़माने में, बुराई के दरख़्त की जड़ों तो पानी दिया जाता है। उस बुराई से बचने के लिए उस दरख़्त की पत्तियों को काटा जाता है। मिसाल के तौर पर HIV के इलाज पर बहुत पैसा व ताक़त ख़र्च की जा रही है, लेकिन वे चीज़े जो इसकी वजह बनती हैं जैसे ज़िना, ड्रग्स, बेहेयाई, तवाइफ़ें, अगलामबाज़ी वग़ैरह, को बन्द नहीं किया जा रहा। बल्कि उनको बढ़ावा दिया जा रहा है।

आज बुरी चीज़ों को अच्छे नाम से पेश किया जा रहा है जैसे नंगेपन को Boldness, दूसरों पर कीचड़ उछालने को पत्रकारिता, बड़ों का सम्मान न करने को Frankness, नार्जाइज़ दौलतमंदी को शराफ़त, ग़रीबी को बुराई, भ्रष्टाचार को

राजनीति, धोखाधड़ी को होशियारी और बेहेयाई को तफ़रीह, तरक़्क़ी, कल्चर, व आर्ट के नाम पर पेश किया जा रहा है। जब बुराई को बुरा समझने का एहसास ही ख़त्म हो जाएगा बल्कि उसे अच्छा समझा जाने लगेगा, तो क्या उम्मीद की जानी चाहिए: कोई उससे दूर रहने व उसे ख़त्म करने की कोशिश करेगा?

हक़ीक़त यह है कि समाज में बुराई कभी ख़त्म नहीं की जा सकती, लेकिन उसे कंट्रोल ज़रूर किया जा सकता है।

ख़ुदा का ख़ुद किसी बात की नसीहत करना, उस बात की ग़ैरमामूली अहमियत को बताता है। ख़ुदा कभी नहीं चाहता कि इंसान कोई ग़लत काम करके तकलीफ़ में आए या नुक़्सान उठाए। लेकिन क्योंकि उसने इंसान को आज़ादी दी है, इसलिए वह नहीं रोकेगा बुराई से, बल्कि इंसान को ख़ुद रुकना होगा।

ज़ुल्म न करना

"न तुम अन्याय करो और न तुम्हारे साथ अन्याय किया जाए।" **(क़ुरआन, 2:279)**

एक अच्छे समाज की पहचान यह है कि वहाँ के रहने वाले किसी पर ज़ुल्म नहीं करते और न उन पर कोई ज़ुल्म करता है।

ज़ुल्म करना अगर बड़ा गुनाह है, तो ज़ुल्म सहना भी : जबकि उसे रोकने की ताक़त हो—कोई कम गुनाह नहीं है। किसी इंसान पर ज़ुल्म हो रहा हो, और उसमें उसे रोकने की ताक़त न हो, जबकि दूसरा इंसान उसे देख रहा हो और रोक भी सकता हो, मगर वह न रोके, तो वह भी गुनाहगार है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने कहा अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा—मज़लूम तो समझ में आता है, मगर ज़ालिम की क्यों? आप (सल्ल.) ने जवाब दिया कि ज़ालिम को ज़ुल्म से रोको यह उसकी मदद है।

एक इंसान पर ज़ुल्म हो रहा हो और दूसरे लोग यह सोच कर बचते हों कि यह उनका मामला नहीं है। यह रवैया समाज को तबाही की तरफ़ ले जाता है : ज़ालिम को ज़ुल्म करते रहने की आज़ादी देना, ऐसा ही है जैसे उसे अपने ऊपर ज़ुल्म करने की दावत देना। जब इंसान बड़े ज़ेहन से सोचता है, तब उसे पता चलता है कि दूसरों के फ़ायदे में उसका अपना भी फ़ायदा और दूसरों के नुक़्सान में उसका अपना भी नुक़्सान है।

ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना

"अल्लाह बुरी बात खुल्लम-खुल्ला कहने को पसंद नहीं करता, मगर उसकी बात और है जिस पर ज़ुल्म किया गया है।" **(क़ुरआन, 4:148)**

किसी इंसान का किसी दूसरे इंसान की बुराई करना अच्छी बात नहीं है। लेकिन यह उसूल मज़लूम पर लागू नहीं होता, उसको इजाज़त है कि वह ज़ालिम की बुराई कर सकता है, अगर वह चाहे।

सबसे अच्छी बात यह है कि बुराई (ज़ुल्म) करने से बचा जाए। लेकिन अगर ऐसा हो जाए, तो बुराई करने वाले और देखने वालो दोनों को चाहिए कि उसका चर्चा न करें। बुराई करने वाले को जब समझाना हो, तो अकेले में समझाएँ, ऐसा न करने पर उस इंसान के बुराई पर अड़े रहने और बुराई के फैलने का अंदेशा है।

मज़लूम जब ज़ालिम की बुराई करता है तो इससे दूसरे लोगों को बचने का मौक़ा मिलता है और ज़ालिम के ख़िलाफ़ समाजी दबाव बनता है, जिससे मुमकिन है कि वह ज़ुल्म करने से रुक जाए।

एक आदमी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के पास पहुँचा और अपने पड़ोसी के तकलीफ़ पहुँचाने की शिकायत की। आप (सल्ल.) ने कहा कि तुम अपना सामान घर से निकाल कर बाहर रास्ते पर रख दो। उस आदमी ने ऐसा ही किया। जो आदमी भी वहाँ से गुज़रता उससे, इसकी वजह पूछता और वह अपने पड़ोसी के ज़ुल्म को बताता। तब हर गुज़रने वाला उसके पड़ोसी पर लानत करता व बुरा-भला कहता। उस आदमी के पड़ोसी ने जब यह देखा तो उससे माफ़ी माँगी, आगे कभी ऐसा न करने का यक़ीन दिलाया और उससे अपना सामान (घर के) अन्दर रखने की दरख़ास्त की। (हदीस : अबू दाऊद)

ख़ुदा पर यक़ीन : ख़ुद पर यक़ीन

"और उन लोगों की तरह न हो जाना, जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी है।" **(क़ुरआन, 59:19)**

ख़ुद पर यक़ीन (Confidence) ज़िन्दगी मे कामयाब होने और मुश्किलों का सामना करने के लिए बहुत ज़रूरी है। मगर यह आत्मविश्वास कैसे पैदा किया जाता है?

आत्मविश्वास दो तरह से पैदा किया जा सकता है : तौहीदी तरीक़ा और ग़ैर-तौहीदी तरीक़ा। तौहीदी तरीक़ा यह है कि इंसान माने कि उसका बनाने वाला सिर्फ़ एक अल्लाह है, जो हर चीज़ को जानता है, जिसकी मर्ज़ी के बिना कुछ नहीं हो सकता। कामयाबी व नाकामी, ताक़त व कमज़ोरी, इज़्ज़त व ज़िल्लत और ज़िन्दगी व मौत, सभी कुछ उसी के हाथ में है। हर चीज़ का लेने व देने वाला सिर्फ़ और सिर्फ़ वही एक अल्लाह है, उस जैसा कोई नहीं।

ग़ैर तौहीदी तरीक़ा यह है कि इंसान अपनी दौलत, ताक़त, हुस्न, (ख़्वाहिश और ज़रूरत) वग़ैरह पर यक़ीन करके आत्मविश्वास पैदा करे।

ग़ैर-तौहीदी तरीक़े से जो आत्मविश्वास पैदा होता है, वह कभी तवाज़ुन (Balance) में नहीं रहता, कभी ज़्यादा हो जाता है और कभी कम। तौहीदी तरीक़े से जो आत्मविश्वास पैदा होता है, वह हमेशा तवाज़ुन में रहता है और इंसान को पाने या खोने और कामयाबी या नाकामी, किसी भी हालत में मायूस नहीं करता।

ख़ुदा पर यक़ीन ही वह मज़बूत बुनियाद है, जिससे ख़ुद पर भी सच्चा व पक्का यक़ीन पैदा होता है। जैसे किसी इंटरव्यू पर जाने से पहले, अगर कोई यह माने कि नौकरी का मिलना, सिर्फ़ सिफ़ारिश की वजह से होता है, तो ऐसा इंसान इंटरव्यू की सही तैयारी के बजाय, सिफ़ारिश करने वाले लोगों की तलाश में लगा रहेगा। ख़ुदा को नौकरी का देने या न देने वाला मानकर, इंसान किसी की सिफ़ारिश की तलाश में अपना वक़्त बर्बाद नहीं करता, बल्कि इंटरव्यू की पूरी तैयारी करता है, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और ऐसा इंसान पूरी बहादुरी से इंटरव्यू का सामना कर सकता है। जबकि सिफ़ारिश पर यक़ीन करने वाला इंसान उस बहादुरी से इंटरव्यू का सामना नहीं कर सकता।

ख़ुदा को मुसलसल याद रखने और उस पर मज़बूत यक़ीन रखने का सीधा उसर यह होता है कि इंसान का ख़ुद पर भी यक़ीन बढ़ जाता है। ऐसा इंसान कामयाबी या नाकामी किसी भी हालत में गुरूर करके या मायूस होकर अपना तवाज़ुन नहीं खोता।

ख़ुदा से ग़ाफ़िल होने वाला, ख़ुद से इस तरह ग़ाफ़िल होता है कि वह अपनी सारी कोशिशे व जिद्दोजहद उस मक़्सद व मंज़िल की तरफ़ लगाता है, जिसका अंजाम हमेशा बुरा ही होता है। क्योंकि सिर्फ़ ख़ुदा को ख़ुश करने वाले कामों में ही इंसान का हक़ीक़ी फ़ायदा होता है। जब इंसान ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने को अपना मक़्सद नहीं बनाता, तब अपनी इच्छाओं को पूरा करना ही उसका मक़्सद बन जाता है। ऐसे इंसान के हर काम में या तो ज़्यादती होती है या कमी, यानी संतुलन उसकी ज़िन्दगी से निकल जाता है। ऐसा इंसान न सिर्फ़ अपनी ज़िन्दगी बल्कि अपनी बातों व कामों से दूसरों की ज़िन्दगी को भी ऐसा ही बनाना चाहता है। ऐसा इंसान ख़ुद भी नुक़्सान उठाता है और समाज को भी नुक़्सान पहुँचाता है। यह वही इंसान है जो ख़ुदा को भूलने के नतीजे में ख़ुद को भूल जाता है : अपनी ज़िन्दगी के मक़्सद और अपनी हक़ीक़ी कामयाबी को भूल कर।

ग़लत आदमी की बात न मानना

> **"और ऐसे व्यक्ति की बात न मानना, जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल पाया है और वह अपनी इच्छा और वासना के पीछे लगा हुआ है और उसका मामला हद से आगे बढ़ गया है।"**
>
> (क़ुरआन, 18:28)

ख़ुदा को भूलने के नतीजे में इंसान अपनी इच्छाओं का गुलाम बन जाता है। इच्छाओं का गुलाम बनने के नतीजे में इंसान, इंसाफ़ को छोड़ देता है। इस तरह उसकी ज़िन्दगी असंतुलित हो जाती है। ऐसा इंसान किसी को मशवरा भी देगा तो ग़लत देगा, जो इंसाफ़ के ख़िलाफ़ होगा। इंसान अपनी इच्छाओं को कंट्रोल करता है या उसकी इच्छाएँ उसे कंट्रोल करती है। इंसान का ख़ुदा को भूलना, उसे उसकी इच्छाओं का गुलाम बना देता है। ऐसे आदमी की अपनी ज़िन्दगी तो ग़लत होती ही है, उसके असर से दूसरों की ज़िन्दगी में भी ख़राबी आने लगती है। ऐसा इंसान अगर समझाने पर न समझे तो उससे बचना ही ख़ुद की हिफ़ाज़त व फ़ायदा है।

मज़हबी तकलीफ़ देने से बचना

"अल्लाह के सिवा जिन्हें ये पुकारते हैं, तुम उनके प्रति अपशब्द का प्रयोग न करो। ऐसा न हो कि वे हद से आगे बढ़कर अज्ञानवश अल्लाह के प्रति अपशब्द का प्रयोग करने लगें।" (क़ुरआन, 6:108)

सच्ची व अच्छी बात पेश करने के जोश में किसी इंसान को इतना आगे नहीं बढ़ना चाहिए कि वह दूसरे मज़हब के मानने वालों के बुज़ुर्गों और ख़ुदाओं को बुरा भला कहने लगे। इसका नतीजा यह होगा कि दूसरे भी उसके ख़ुदा को बुरा कहने लगेंगे। वे ज़िद व नफ़रत की वजह से सच बात से और ज़्यादा दूर होते चले जाएंगे।

दूसरे की चीज़ों को बुरा कहना, अपनी चीज़ों की बुराई, सुनने की मंज़ूरी देना है। यह वह उसूल हैं जिसको न मानकर इंसान जितना दूसरों का नुक़सान करता है उतना ही अपना भी नुक़सान करता है।

हुज़ूर (सल्ल.) ने फ़रमाया कि किसी आदमी का अपने माँ-बाप को गाली देना बड़ा गुनाह है। लोगों ने पूछा कि कोई आदमी अपने माँ-बाप को कैसे गाली दे सकता है (यानी कभी नहीं दे सकता) हुज़ूर (सल्ल.) ने जवाब दिया : कोई किसी के बाप को गाली देगा तो दूसरा आदमी उसके बाप को गाली देगा और कोई किसी की माँ को गाली देगा तो दूसरा आदमी भी उसकी माँ को गाली देगा। (हदीस : बुख़ारी)

इंसान की शख़्सियत (Personality) दो चीज़ों से मिलकर बनती है : विरासत में मिली बनावत (Nature) और माहौल (Nurture)। इंसान जिन बातों को सुन-सुनकर बड़ा होता है, वह उनको सच मानने लगता है और उनका हिमायती बन जाता है। किसी इंसान को "सच" तक पहुँचने के लिए ज़रूरी होता है कि वह पहले से बने अपने फ़िकरी ढाँचे को तोड़े, तब ही मुमकिन होता है कि वह सच तक पहुँच सके। मगर अक्सर इंसान अपनी ग़लत बात की बुराई सुनना भी पसंद नहीं करता।

एकता पैदा करना

"और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो।" (क़ुरआन, 3:103)

अलग-अलग लोग जब एक मर्कज़ (Centre) पर जमा हों, तो एकता पैदा होती है। लेकिन जब लोग, अलग-अलग मर्कज़ पर जमा हों, तो अनेकता पैदा होती है। खुदा को मर्कज़ बनाकर ज़िन्दगी गुज़ारने से इंसानों में एकता पैदा होती है। जबकि खुद को मर्कज़ न बना कर ज़िन्दगी गुज़ारने से अनेकता आती है।

जब अलग-अलग लोगों का किसी एक बात में फ़ायदा होता है, तब वे एक हो जाते हैं। लेकिन जब किसी दूसरी बात में किसी एक का फ़ायदा और किसी दूसरे का नुक़्सान हो, तो उनमें अनेकता आ जाती है। इससे बिल्कुल उलटा यह है कि जब अलग-अलग लोग एक ख़ुदा को मर्कज़ बना कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, तो उनकी ज़िन्दगी का मक़्सद ख़ुदा को ख़ुश करना बन जाता है, चाहे दुनियावी ज़िन्दगी में फ़ायदा हो या नुक़्सान। यही अस्ली एकता होती है।

अल्लाह की रस्सी यानी उसका पैग़ाम इंसानों को ख़ुदा से जोड़ने और इंसानों को इंसानों से जोड़ने के लिए है। दरअस्ल सच्ची एकता नतीजा है ख़ुदा से जुड़ने का। जो बातें इंसान को ख़ुदा से दूर करती है, वे इंसानों को भी इंसानों से दूर करती है।

इंसानी ज़िन्दगी में एकता का होना ख़ुदा को पसंद है और अनेकता का होना नापसन्द है। इसीलिए वे लोग जो किसी भी तरह एकता को अनेकता में बदलने की कोशिश करते हैं, वे ख़ुदा की सज़ा से नहीं बच सकते।

इंसाफ़ करना

“इंसाफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो। हम किसी व्यक्ति पर उसी काम की ज़िम्मेदारी का बोझ डालते हैं जो उसकी सामर्थ्य में हो। और जब बात कहो तो न्याय की कहो, चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो, और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो। ये बातें हैं, जिनकी उसने तुम्हें ताकीद की है। आशा है तुम ध्यान रखोगे।” **(क़ुरआन, 6:152)**

आमतौर पर लोग समझते हैं कि ज़िन्दगी में कुछ (जैसे दौलत, शोहरत, ताक़त, कामयाबी, इज़्ज़त वग़ैरह का) मिलना फ़ायदा है और कुछ न मिलना या मिला हुआ चला जाना, नुक़्सान है। सोचने का यह तरीक़ा सही नहीं है। यह बात तब सही होती, जब यह दुनियावी ज़िन्दगी पहली व आख़िरी होती।

ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों के ज़रिये इंसानों को बताया कि यह दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ एक इम्तिहान है और बहुत थोड़े वक़्त के लिए है, इसके बाद एक कभी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी (आख़िरत) है। इंसान कभी न ख़त्म होने के लिए पैदा किया गया है। मौत तो सिर्फ़ एक जगह से दूसरी जगह जाना (Transfer) है।

दुनियावी ज़िन्दगी को जब आख़िरत के साथ जोड़ कर देखा जाता है, यानी कभी न ख़त्म होने वाला माना जाता है, तब इंसान की नज़र में फ़ायदा व नुक़्सान के पैमाने बदल जाते हैं। फ़ायदा उस बात में है, जिसको ख़ुदा पसंद करे और नुक़्सान उस बात में है, जिसको ख़ुदा नापसंद करे। ख़ुदा की पसंद मानने से इस दुनिया में अगर कोई चीज़ मिलती है, तो भी फ़ायदा है और अगर कोई चीज़ नहीं मिलती या मिली हुई चीज़ चली जाती है, तो भी फ़ायदा है। जबकि ख़ुदा की पसंद या नापसंद को अगर इंसान अपनी ज़िन्दगी से हटा दे, तो उसे सिर्फ़, किसी चीज़ के मिलने में फ़ायदा नज़र आता है।

ख़ुदा को सही तौर पर मानने के नतीजे में जब सोच के पैमाने बदलते हैं, तो इंसान चीज़ों को फ़ायदा या नुक़्सान में नहीं बाँटता बल्कि ख़ुदा की पसंद या नापसंद, दूसरे लफ़्ज़ों में जाइज़ या नाजाइज़, हक़ या नाहक़, सही या ग़लत में बाँटकर देखता है। यहीं से बनता है इंसाफ़ या नाइंसाफ़ी का मज़बूत तसव्वुर। इस तरह सोचने वाले

आदमी से सिर्फ़ एक ही चीज़ की उम्मीद की जाती है, और वह है "हर हाल-में इंसाफ़"।

मुआहिदे (Contracts) दो प्रकार के होते हैं : फ़ितरी मुआहिदा (Natural Contract) और ग़ैर-फ़ितरी मुआहिदा (Un-natural Contract)।

फ़ितरी मुआहिदा वह होता है जो इंसान के पैदा होते ही, इंसान व ख़ुदा और इंसान व इंसान के बीच ख़ुद-ब-ख़ुद बन जाता है। ग़ैर-फ़ितरी मुआहिदा वह होता है, जो एक इंसान (ख़ुदा का नाम लेकर या न लेकर) दूसरे इंसानों से करता है, और वह भी, जो एक इंसान ख़ुदा से करता है।

इंसान के लिए ज़रूरी है कि वह इन दोनों मुआहिदों को पूरा करे। क्योंकि इंसान के वुजूद पर ख़ुदा और समाज के बेशुमार एहसान हैं, अब अगर वह इन लिखे हुए या न लिखे हुए मुआहिदों को तोड़ता है, तो उसका यह काम एहसान न मानने और बग़ावत करने जैसा होगा। इन मुआहिदों में, इंसाफ़ करना, पूरा लेन-देन करना और रिश्तों को निभाना वग़ैरह आता है। इन मुआहिदों को करने या न करने का कोई फ़ायदा ख़ुदा को नहीं मिलता, बल्कि इनका फ़ायदा ख़ुद इंसान व समाज को पहुँचता है।

चुग़लियाँ करने से बचना

"तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जो बहुत क़समें खाने वाला, हीन है। कचोके लगाता, चुग़लियाँ खाता फिरता है, भलाई से रोकता है, सिमा का उल्लंघन करने वाला, हक़ मारने वाला है, क्रूर है फिर अधम भी।" (क़ुरआन, 68:10-13)

कुछ लोग अपनी बात का यक़ीन दिलाने के लिए बार-बार क़समें खाते हैं। बात-बात में क़समें खाने वाला, ऐसा इस लिए करता है क्योंकि वह ख़ुद को झूठा समझता है और जानता है कि लोग भी उसे झूठा समझते हैं। जबकि किसी बात का सच या झूठ होना क़सम से साबित नहीं होता बल्कि दलील या सुबूत से होता है।

कचोके लगाना, दूसरे को ज़लील समझना; ख़ुद को बरतर समझने की वजह से होता है।

चुग़लियाँ करने के पीछे जो मक्सद होता है, वह यह है कि दो लोगों या ग्रुपों को आपस में लड़वाया जाए और उन्हें भलाई से रोका जाए। ऐसा करने वाला आदमी हर अच्छे काम में रुकावट बनता है।

यह सारे काम हक़ मारने के काम हैं। झूठ को क़सम खाकर सच बनाना क़सम और सच का हक़ मारना है। कचोके लगाना इंसान की इज़्ज़त का हक़ मारना है। चुग़लियाँ लगाना माहौल का हक़ मारना है। और हक़ मारने वाले ही ज़ालिम होते हैं। यह सब वही बातें हैं, जो एक अच्छे इंसान को बुरे इंसान में तबदील कर देती है। वह अपनी व समाज दोनों की निगाहों में ज़लील हो जाता है।

सच को न छिपाना

"और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते बूझते सत्य को छिपाओ मत।" (क़ुरआन, 2:42)

सच और झूठ दो अलग-अलग बाते हैं। सभी इंसान सच को अच्छा समझते हैं और झूठ को बुरा। लेकिन जब अमल का वक़्त आता है, तो बहुत कम लोग होते हैं, जो हमेशा सच का साथ दें। सब सच का साथ देते हैं जब उनका फ़ायदा होता है। लेकिन जब सच का साथ देने में नुक़्सान हो, तो बहुत कम लोग होते हैं, जो तब भी सच ही का साथ देते हैं।

ज़्यादातर बेईमान लोग, अपने फ़ायदे के लिए सच को छिपाते हैं और झूठ को सच बनाकर पेश करते हैं।

आम आदमी सच और झूठ में तो फ़र्क़ कर सकता है, लेकिन उस झूठ को समझना सब लोगों के बस की बात नहीं होती, जिसे सच बनाकर पेश किया जाता है। सिर्फ़ कुछ लोग ही सच की शक्ल में छिपे झूठ को पकड़ सकते हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया : "अक़्लमंद वह नहीं, जो यह पहचाने कि सही क्या है और ग़लत क्या। बल्कि अक़्लमंद वह है जो यह पहचाने कि दो ग़लत में से सही क्या है।"

इस दुनिया में मुमकिन है कि कोई झूठ को सच बनाकर दिखा दे। क्योंकि यह दुनिया इम्तिहान की जगह है न कि नतीजे की, मगर जब दूसरी और सदा रहने वाली दुनिया में जाना होगा, तो वहाँ सिर्फ़ सच ही सच होगा, सारे झूठ खोल दिए जाएंगे। ज़बान खुद गवाही देगी की उसने क्या झूठ बोला, हाथ खुद बतलाएंगे कि उन्होंने क्या बुरा किया।

खुद की जाँच करें

"वास्तव में जहन्नम एक घात-स्थल है; सरकशों का ठिकाना है। वास्तुस्थिति यह है कि वे उसमें मुद्दत पर मुद्दत बिताते रहेंगे। वे उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का, सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के। यह बदले के रूप में उनके कर्मों के ठीक अनुकूल होगा। वास्तव में वे किसी हिसाब की आशा न रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों को ख़ुब झुठलाया, और हमने हर चीज़ लिखकर गिन रखी है।" **(क़ुरआन, 78:21-29)**

इंसान एक बदलने वाली मख़्लूक़ (Creature) है। कोई बुरा इंसान कब अच्छा हो जाए और कोई अच्छा इंसान कब बुरा हो जाए, कहा नहीं जा सकता। इंसान को सही रखने के दो तरीक़े हो सकते हैं। एक, बाहर से अन्दर की तरफ़, यानी बाहर से क़ानून, पुलिस व ताक़त से डराकर इंसान को ग़लत काम करने से रोका जाए। दूसरे, अन्दर से बाहर की तरफ़, यानी इंसान की सोच को बदला जाए और उसे यक़ीन दिलाया जाए कि ख़ुदा है, उसे देख रहा है और मरने के बाद उससे हिसाब लेगा।

इस्लाम ने यही दूसरा तरीक़ा अपनाया इंसान को सही रखने के लिए, ताकि उस जगह इंसान सही काम करे, जहाँ कोई देख रहा हो और उस जगह भी सही काम करे, जहाँ कोई न देख रहा हो। दोनों जगह वह यह समझे कि कोई देखे न देखे ख़ुदा तो देख ही रहा है।

इंसान अपने कामों पर लगातार कड़ी नज़र रखे और हर लम्हे ख़ुद की जाँच करता रहे, तभी ग़लतियों से बचा जा सकता है और सुधार किया जा सकता है। वर्ना जब इंसाफ़ का वक़्त आ जाएगा तो पछताने का कोई फ़ायदा न होगा।

सही गवाही देना

"ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) अल्लाह को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर रहेगी।" (क़ुरआन, 4:135)

ऐसा मुमकिन है कि कोई इंसान अपनी ज़िन्दगी में एक बार इंसाफ़ करे, दो बार इंसाफ़ करे और कई बार इंसाफ़ करे। मगर बार-बार इंसाफ़ करना और हर बार इंसाफ़ करना कोई आसान काम नहीं है, बहुत ही कम लोग होते हैं जो ऐसा कर पाते हैं।

दूसरों के मामले में इंसाफ़ करना आसान होता है, लेकिन मुश्किल तब होती है, जब मामला अपना हो या अपने माँ-बाप या रिश्तेदार या दोस्त का हो। इंसाफ़ करने में अपना या अपने-अपनो का फ़ायदा हो रहा हो, तो किसी को कोई परेशानी नहीं होती, लेकिन जब इंसाफ़ करने में अपना या अपने-अपनों का नुक़्सान हो रहा हो तब ही अस्ल आज़माइश होती है।

इंसाफ़ के लिए सही गवाही देने में, उस वक़्त भी मुश्किल आती है जब कोई बात ताक़तवर व दौलतमंद के ख़िलाफ़ हो। इसके मुक़ाबले कमज़ोर व ग़रीब के ख़िलाफ़ बात कहना आसान होता है।

इंसान की ख़्वाहिश होती है कि वह हमेशा फ़ायदे में रहे और उसके अपने भी हमेशा फ़ायदे में रहें। इस ख़्वाहिश में कोई बुराई नहीं है, जब तक यह जाइज़ हदों में है। मगर जब यह ख़्वाहिश बढ़कर नाजाइज़ बनती है और इंसान चाहने लगता है कि वह और उसके अपने, चाहे सही हों या ग़लत हमेशा फ़ायदे ही में रहें, उस

वक़्त ग़ैरों का नुक़सान हो, चाहे वे सही क्यों न हों। इंसान जो इंसाफ़ के लिए सही गवाही नहीं देता वह इसी नाजाएज़ ख़्वाहिश ही की वजह से होता है।

कभी-कभी इंसान, इंसाफ़ के लिए सही गवाही देना चाहता है, लेकिन किसी दबाव या डर से वह ऐसा नहीं करता। वहाँ वह मामूली से हेर-फेर को अपनाता है, ताकि ख़ुद को नुक़सान से बचा सकें। मगर वह भूल जाता है कि ख़ुदा हर जगह है और उसे देख रहा है।

गवाही को न छिपाना

"और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है, तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।" **(क़ुरआन, 2:282)**

अच्छे ढंग से अपनी बात कहना

"अपने रब के मार्ग की ओर तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो।

(क़ुरआन, 16:125)

अश्लीलता न फैलाना

"जो लोग चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए हैं, अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दुखद यातना है।"

(क़ुरआन, 24:19)

ग़रीबी के डर से जाइज़ काम न करना

"शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है।" (क़ुरआन, 2:268)

लुभावने तरीक़े अपनाकर गुमराह न करना

"लोगों में से कोई ऐसा भी है जो दिल को लुभाने वाली बातों का ख़रीदार बनता है। ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (दूसरों को) भटकाए और उनका परिहास करें। वही है जिनके लिए अपमानजनक यातना है।" (क़ुरआन, 31:6)

सच बात को झूठ के परदे में न छिपाना

"और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते-बूझते सत्य को छिपाओ मत।" (क़ुरआन, 2:42)

अपनी ग़लती को मान कर सुधार करना

"और जिन (नेक लोगों) का हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल अल्लाह उन्हें याद आ जाता है, और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं—और अल्लाह के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते।" (क़ुरआन, 3:135)

अल्लाह की नाफ़रमानी वाले काम न करना

"जो अल्लाह व उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।" (क़ुरआन, 4:14)

ख़ुदा और उसके मज़हब के नाम पर कोई ग़लत बात न कहना

"और उन (बुरे लोगो) का हाल यह है कि जब वे लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं कि : हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह ही ने हमें इसका आदेश दिया है। कह दो : अल्लाह कभी अश्लील बातों का आदेश नहीं दिया करता। क्या अल्लाह पर थोपकर ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?" (क़ुरआन, 7:28)

होमसेक्शुऐलिटि (समलैंगिकता) का विरोध करना

"और हमने लूत को भेजा (समझाने के लिए)। जब उसने अपनी क़ौम से कहा : क्या तुम वह प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करते हो, जिसे दुनिया में तुमसे पहले किसी ने नहीं किया?

तुम स्त्रियों को छोड़कर मर्दों से कामेच्छा पूरी करते हो, बल्कि तुम नितांत मर्यादाहीन लोग हो।" (क़ुरआन, 7:80-81)

औरतों पर झूठा इल्ज़ाम न लगाना

"निस्संदेह जो लोग शरीफ़, पाकदामन, भोली-भाली, बेख़बर ईमानवाली स्त्रियों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में फिटकार है। और उनके लिए एक बड़ी यातना है।" (क़ुरआन, 24:23)

जाहिलों से दूर रहना

"क्षमा की नीति अपनाओं और भलाई का हुक्म देते रहो और अज्ञानियों से किनारा खीचो।" (क़ुरआन, 7:119)

गुनाहों से बचना

"जो (नेक है वे) बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) गुस्सा आता है तो वे क्षमा कर देते हैं।"
(क़ुरआन, 42:37)

धैर्य रखना

"जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया (अपने साथ बुरा करने वाले को) तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।" (क़ुरआन, 42:43)

गुस्से को रोकना : अच्छे काम करना

"वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में (अच्छे कामों में) ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।" (क़ुरआन, 3:134)

बेईमानों की बात न मानना

"ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम उन लोगों के कहने पर चलोगे जिन्होंने इन्कार का मार्ग अपनाया है, तो वह तुम्हें उल्टे पाँव फेर ले जाएँगे। फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे। बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है, और वह सबसे अच्छा सहायक है।" (क़ुरआन, 3:149-150)

अच्छाई को फैलाना व बुराई से रोकना

"और तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करने वाले लोग हैं।" (क़ुरआन, 3:104)

चिकनी चुपड़ी बातों में न आना

"तुम झूठलाने वालों का कहना न मानना। वे चाहते हैं कि तुम ढ़ीले पड़ो, इस कारण वे चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं। तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जो बहुत क़समें खाने वाला, हीन है, कचोके लगाता, चुग़लियाँ खाता फिरता है। भलाई से रोकता है, सीमा का उल्लंघन करने वाला, हक़ मारने वाला है, क्रूर है फिर अधम भी। इस कारण कि वह धन और बेटों वाला है।" (क़ुरआन, 68:8-13)

ख़्वाहिशात की अंधी पैरवी न करना

"ऐ दाऊद! हमने धरती में तुझे ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया है। अतः तू लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला करना और अपनी इच्छा का अनुपालन न करना कि वह तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका दे। (क़ुरआन, 38:26)

अच्छाई करके किसी पर एहसान न जताना

"यदि तुम ने भलाई की तो अपने ही लिए भलाई की और यदि तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की।" (क़ुरआन, 17:7)

बुराई न करके नुक़्सान न उठाना

"तुम्हें जो भी भलाई प्राप्त होती है, वह अल्लाह की ओर से है और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है, तो वह तुम्हारे अपने ही कारण पेश आती है।" (क़ुरआन, 4:79)

कामों में शिद्दत न अपनाना

"ऐ ईमान लानेवालो! जो अच्छी पाक चीज़े अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, उन्हें हराम न कर लो और हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही अल्लाह को वे लोग प्रिय नहीं हैं, जो हद से आगे बढ़ते हैं।" (क़ुरआन, 5:87)

ख़ुद की निगरानी करना

"यह (जन्नत) है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर रुजू करने वाले, बड़ी निगरानी रखने वाले के लिए, जो रहमान से डरा परोक्ष में और आया रुजू रहने वाला हृदय लेकर।" (क़ुरआन, 50:33)

ख़ुद को सबसे बड़ा अक़्लमन्द न समझना

"और प्रत्येक ज्ञानवान से ऊपर एक ज्ञानवान मौजूद है।"
(क़ुरआन, 12:76)

पत्रकारिता को मक़सद (Mission) समझना :
रोज़ी तो ख़ुदा देता है

"धरती पर चलने फिरने वाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।" (क़ुरआन, 11:6)

अल्लाह को भूलना कामों को कठिन बनाता

"और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे।

वह कहेगा : ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखों वाला था?

वह (अल्लाह) कहेगा : इसी प्रकार (तू संसार में अंधा रहा था)। तेरे पास मेरी आयतें आई थीं, तो तूने उन्हें भूला दिया था। उसी प्रकार आज तुझे भुलाया जा रहा है।" (क़ुरआन, 20:124-126)

मुशकिलों का बर्दाश्त के अन्दर होना

"अल्लाह किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है।" (क़ुरआन, 2:286)

बिगाड़ मत फैलाना

"जो कुछ अल्लाह ने तूझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत

चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 28:77)

खुले व छिपे, गुनाहों से बचना व बचाना

"छोड़ो खुले गुनाह को भी और छीपे को भी। निश्चय ही गुनाह कमाने वालों को उसका बदला दिया जाएगा, जिस कमाई में वे लगे रहे होंगे।" (क़ुरआन, 6:120)

मुहब्बत में ग़लत काम न करना

"मनुष्यों को चाहत की चीज़ों से प्रेम शोभायमान प्रतीत होता है कि वे स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर और निशान लगे (चुने हुए) घोड़े हैं और चौपाए और खेती यह सब सांसारिक जीवन की सामग्री है और अल्लाह के पास ही अच्छा ठिकाना है। कहो! क्या मैं तुम्हें इनसे उत्तम चीज़ का पता दूँ? जो लोग अल्लाह का डर रखेंगे उनके लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। वहाँ पाक साफ़ जोड़े होंगे और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने बन्दों पर नज़र रखता है।" (क़ुरआन, 3:14-15)

चालबाज़ी न करना

"जो कोई प्रभुत्व चाहता हो तो प्रभुत्व तो सारा का सारा अल्लाह के लिए है। उसी की ओर अच्छा पवित्र बोल चढ़ता है और अच्छा कर्म उसे ऊँचा उठाता है। रहे वे लोग जो बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए कठोर यातना है और उनकी चालबाज़ी मलियामेट होकर रहेंगी।" (क़ुरआन, 35:10)

काम में महारत हासिल करना

"जो (नेक लोग) कहते हैं : ऐ हमारे रब! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें परहेज़गारों का इमाम (Leader) बना दे।" (क़ुरआन, 25:74)

कहने और करने में फ़र्क़ न होना

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं?

अल्लाह के यहाँ यह अत्यंत अप्रिय बात है कि तुम वह बात कहो, जो करो नहीं।" (क़ुरआन, 61:2-3)

समाज की चाह के बग़ैर; सुधार न हो सकना

"किसी क़ौम के लोगों को जो कुछ प्राप्त होता है अल्लाह उसे बदलता नहीं, जब तक कि वे स्वयं अपने आपको न बदल डालें।" (क़ुरआन, 13:11)

दुआ माँगना

"उस (मूसा) ने निवेदन किया : मेरे रब! मेरा सीना, मेरे लिए खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी ज़बान (व क़लम) की गिरह खोल दो। कि वे मेरी बात समझ सकें।" (क़ुरआन, 20:25-28)

निजी ज़िन्दगी में दख़्ल न देना

"और न टोह में पड़ो।" (क़ुरआन, 49:12)

अच्छे काम के बुरे नतीजे पर मायूस न होना

"बहुत संभव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत संभव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और जानता अल्लाह है, और तुम नहीं जानते।" (क़ुरआन, 2:216)

हलाल रोज़ी खाने से, अच्छे काम का आसान होना

"अच्छी पाक चीज़े खाओ और अच्छा कर्म करो।" (क़ुरआन, 23:51)

झूठ न बोलना

"निश्चय ही अल्लाह उसको मार्ग नहीं दिखाता जो मर्यादाहीन, बड़ा झूठा हो।" (क़ुरआन, 40:28)

नरम मिज़ाजी लोगों को क़रीब लाती

"अल्लाह की ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम (मुहम्मद) उनके लिए नर्म हो हरे हों, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो यह सब तुम्हारे पास से छँट जाते।" (क़ुरआन, 3:159)

ख़ुदा की तरफ़ झुकना

"अपनी ओर (सत्य की तरफ़) तो वह (अल्लाह) मार्गदर्शन उसी का करता है जो रुजू होता है।" (क़ुरआन, 13:27)

सही काम को सही तरीक़े से करने पर ख़ुदा की मदद का मिलना

"(कहफ़ के नवजवानों ने अपने साथियों से कहा) और जबकि इन (नाफ़रमानों) से तुम अलग हो गए हो और उनसे भी जिनको अल्लाह के सिवा ये पूजते हैं, तो गुफ़ा में चलकर शरण लो। तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी दयालुता का दामन फैला देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे अपने काम के संबंध में सुगमता का उपकरण उपलब्ध कराएगा।" (क़ुरआन, 18:16)

होशियार : हर बात एक इम्तिहान

"हम (अल्लाह) अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेंगे, यहाँ तक कि हम तुम में से जो जिहाद (बहुत जिद्दोजहद) करने वाले हैं और जो दृढ़ता-पूर्वक जमे रहने वाले हैं उनको जान लें और तुम्हारी हालतों को जाँच लें।" (क़ुरआन, 47:31)

दुनिया से जाइज़ फ़ायदा हासिल करना

"जो कुछ अल्लाह ने तूझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल। और भलाई कर जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है।" (क़ुरआन, 28:77)

मशवरा करना

"और जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ क़ायम की और उनका मामला उनके पारस्परिक परामर्श से चलता है।" (क़ुरआन, 42:38)

मुसीबत में नमाज़ व सब्र (जिद्दोजहद के दौरान बर्दाश्त) के साथ अल्लाह से मदद माँगना

"ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।" (क़ुरआन, 2:153)

जाइज़ अहद को पूरा करना

"ऐ ईमान लानेवालो! प्रतिबंधों (प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण रूप से पालन करो।" (क़ुरआन, 5:1)

ज़ुल्म करना; सत्य से दूर करता

"निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।"
(क़ुरआन, 5:51)

मज़हबी लीडरों से होशियार रहना

"ऐ ईमान लानेवालो! अवश्य ही बहुत से धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी संत ऐसे हैं जो लोगों के माल नाहक़ खाते हैं और अल्लाह (सत्य) के मार्ग से रोकते हैं।" (क़ुरआन, 9:34)

पूरे ध्यान से काम करना

"मेरे उन बन्दों को शुभ सूचना दे दो जो बात को ध्यान से सुनते हैं, फिर उस अच्छी से अच्छी बात का अनुपालन करते हैं। वही हैं, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है और वही बुद्धि और समझ वाले हैं।" (क़ुरआन, 39:17-18)

बेहतरीन बात करना

"मेरे बन्दों से कह दो कि बात वही कहें जो उत्तम हो।" (क़ुरआन, 17:53)

सहयोग अच्छे काम में, न कि बुरे काम में

"हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो।" (क़ुरआन, 5:2)

अच्छे तरीक़े से बहस करना

"और किताब वालों से बस उत्तम रीति ही से वाद-विवाद करो–रहे वे लोग जो उनमें ज़ालिम हैं, उनकी बात दूसरी है।" (क़ुरआन, 29:46)

फ़ायदा पहुँचाने वाले बनने पर तरक़्क़ी का होना

"जो कुछ लोगों को लाभ पहुँचाने वाला होता है, वह धरती में ठहर जाता है।" (क़ुरआन, 13:17)

अच्छाई के लिए सिफ़ारिश करना

"जो कोई अच्छी सिफ़ारिश करेगा, उसे उसके कारण प्रतिदान मिलेगा और जो बुरी सिफ़ारिश करेगा, तो उसके कारण उसका बोझ उस पर पड़कर रहेगा।" (क़ुरआन, 4:85)

सुधार का काम मुहब्बत से करना : हर व्यक्ति का खुद को सही समझना

"हमने हर गिरोह के लिए उसके कर्म को सुहावना बना दिया है। फिर उन्हें अपने रब ही की ओर लौटना है। उस समय वह उन्हें बता देगा, जो कुछ वे करते रहे होंगे।" (क़ुरआन, 6:108)

बुरे लोगों के रास्ते पर न चलना

"(मूसा ने हारून से कहा) मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना और सुधारना-सँवारना और बिगाड़ पैदा करने वालों के मार्ग पर न चलना।" (क़ुरआन, 7:142)

सच्चे लोगों की संगत में रहना

"ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।" (क़ुरआन, 9:119)

धोखा मिलने की आशंका पर संधि तोड़ी जा सकना

"और यदि तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात की आशंका हो, तो तुम भी उसी प्रकार ऐसे लोगों के साथ हुई संधि को खुल्लम-खुल्ला उनके आगे फेंक दो। निश्चय ही अल्लाह को विश्वासघात करने वाले प्रिय नहीं।" (क़ुरआन, 8:58)

बिगाड़ फैलाने से बचना

"जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनका बदला तो बस यही है कि बुरी तरह क़त्ल किए जाएँ या सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं में काट डाले जाएँ या उन्हें देश से निष्कासित कर दिया जाए। यह अपमान और तिरस्कार उनके लिए दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है।" (क़ुरआन, 5:33)

यक़ीनी बात करना

"वे तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं उतारी। वे तो केवल अटकल के पीछे चल रहें हैं और उसके पीछे तो उनके मन की इच्छा होती हैं। हालाँकि उनके पास उनके रब की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है।" (क़ुरआन, 53:23)